The Hindu - 12- February-2024

BRS back in agitation mode

This time it's fighting for Krishna basin projects

PS DILEEP
HYDERABAD

Nearly a decade after leading a mass agitation that led to the formation of Telangana, the Bharat Rashtra Samithi (then TRS) is all set to return to agitation mode.

This time, it is to lead a fight against the handing over of the Srisailam and Nagarjuna Sagar projects on the Krishna river to the Krishna River Management Board (KRMB) under the Centre's control. The crucial move will be made with the party's first major public meeting after the Assembly polls, to be held at Nalgonda on Tuesday.

The 'Chalo Nalgonda' meeting will also see party president and former Chief Minister K Chandrashekhar Rao addressing his first public meeting after the elections and undergoing a total hip replacement surgery. He is expected to reveal the party's action plan to safeguard the rights of Telangana in the Krishna river water, and if talk within the party is any indication, he is also likely to sound the poll bugle for the party's LS poll campaign.

The 'anti-Telangana' attitude of both the BJP-led Central government and the Congress-led State government will be in sharp focus at the meeting. Chandrashekhar Rao had been vocal about the rightful share in river waters for Telangana right from the days of the Statehood movement and also after forming the government, with efforts made towards realising that goal by completing several projects. The BRS-led State government, which was in power for 10 years, had also vehemently opposed the Centre's efforts to take over the projects in the name of river boards. The BRS now plans to mobilise like-minded forces for another movement to protect the interests of Telangana and its people. The party leadership has taken up the public meeting as a matter of prestige as it would be the first since the Assembly elections to be addressed by the BRS chief.

KCR to address party's first major public meeting after recently held Assembly elections, 'Chalo Nalgonda', which will be held on Tuesday

The meeting to be organised at Marriguda village is expected to be attended by over five lakh people, with at least 20,000 people from each constituency covering the erstwhile districts of Nalgonda, Mahabubnagar, Warangal and Khammam under the Krishna basin. "We have been raising the issue of re-allocation of rightful share for TS in the river waters as per the AP Reorganisation Act since the State's formation. Following an assurance from the Centre, the then BRS (TRS) government agreed to only temporary allocation of water between both States on an annual basis, to ensure the timely release of water to fields. The Centre is yet to resolve the issue and the Congress government is misleading people by handing over both projects," a BRS leader said.

Hindustan - 12- February-2024

TRACKING | RAINS **Forecasting headache 'Spring Predictability Barrier' only hurdle in making accurate prediction**

El Nino ebbs, bountiful monsoon likely: Weathermen

New Delhi, Feb, 11: After a warm 2023, El Nino conditions are set to dissipate by June raising hopes of "bountiful monsoon" rains this season, meteorologists have predicted.

At least two global climate agencies announced last week that El Nino, the warming of the equatorial Pacific Ocean that impacts weather across the world, has started to weaken and there is a probability of La Nina conditions setting in by August. Weather scientists in India, tracking the developments closely, have said that La Nina conditions setting in by June-August could mean monsoon rains would be better this year. However, they also struck a word of caution citing the 'spring predictability barrier', considered a forecasting headache as weather models have a harder time making accurate forecasts.

Madhavan Rajeevan, former secretary in the Ministry of Earth Sciences, said there is a good probability of La Nina developing by June-July.

"Even if El Nino transitions into ENSO-neutral conditions, the monsoon this year should be better than the last year," he said.

The southwest monsoon delivers about 70 per cent of India's annual rainfall, critical for the agriculture sector that accounts for about 14 per cent of the GDP and employs more than half of its 1.4 billion population. The United States' National Oceanic and Atmospheric Administration (NOAA) said last week that there is a 79 per cent chance that El Nino will transition to ENSO-neutral by April-June and a 55 per cent chance of La Nina developing in June-August. The European Union's Copernicus Climate Change Service confirmed that El Nino has started weakening. La Nina is the cyclic counterpart to El Nino. "We cannot say anything with certainty. Some models indicate La Nina, while some predict ENSO-neutral conditions. However, all models suggest an end to El Nino," D. Sivananda Pai, a senior scientist at IMD, said. — *PTI*

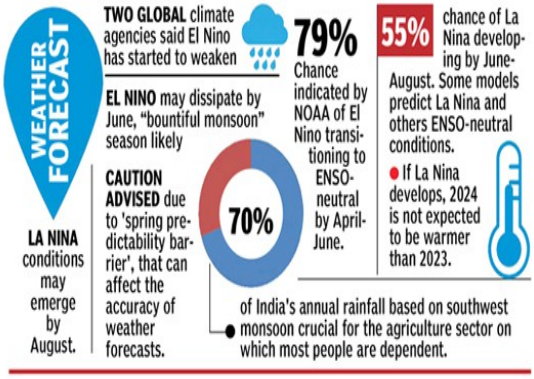

Hindustan - 12- February-2024

साफ पानी पहुंचाने की अच्छी पहल

अनुलोम-विलोम

जल जीवन मिशन

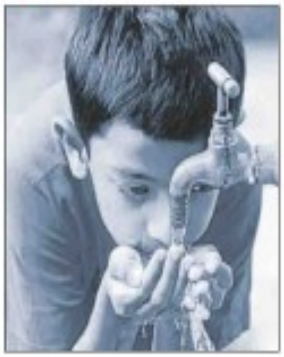

जल जीवन मिशन एक ऐसी पहल है, जो हमारे देश को स्वच्छता, स्वास्थ्य और समृद्धि की दिशा में आगे बढ़ा रही है। इस मिशन के माध्यम से हमारी सरकार ने ग्रामीण क्षेत्रों में जल संसाधनों के विकास को गति दी है, और आम जनता तक शुद्ध एवं सुरक्षित जल की पहुंच सुनिश्चित की है। यह मिशन सिर्फ जल से जल पहुंचाने तक सीमित नहीं है, बल्कि ग्रामीण समुदायों की सुरक्षा, स्वास्थ्य और पर्यावरण के प्रति सरकार की प्रतिबद्धता का भी संकेत है। जल जीवन मिशन के तहत ग्रामीण आबादी को पंप संचालन और जल प्रबंधन से संबंधित कार्यों में भी कुशल बनाया जा रहा है। इस मिशन ने ग्रामीण समुदायों के जीवन में सकारात्मक बदलाव लाने का काम किया है, साथ ही समाज को आत्मनिर्भर बनाने में भी इसने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

जल जीवन मिशन का प्रभाव केवल जल की उपलब्धता तक नहीं है। इसमें स्वास्थ्य जोखिमों को कम करने की दिशा में भी पर्याप्त काम किया गया है। जल जीवन मिशन ने ऐसे नए समीकरण बनाए हैं, जो समृद्ध भविष्य की दिशा में हमें नई राह दिखा रहे हैं। इससे एक ऐसे भारत बनाने का लक्ष्य साकार होता दिख रहा है, जिसमें हरेक नागरिक को स्वच्छ जल तक पहुंच हो, कहीं भी पानी की कमी न हो और किसी भी परिवार को जीवन के इस अमृत के लिए मशक्कत न करनी पड़े। हालांकि, इसके लिए हमें कुछ अतिरिक्त प्रयास भी करने होंगे, जैसे समाज का हर वर्ग इसे अपना सहयोग दे। हमें जल संवर्द्धन के प्रति अधिक जागरूकता और संवेदनशीलता फैलानी होगी। ऐसे-ऐसे नवाचारी तरीके भी ढूंढने होंगे, जिनसे जल संसाधनों को बेहतर तरीके से प्रबंधित किया जा सके।

साफ है, जल जीवन मिशन के माध्यम से समाज को स्वच्छ और सुरक्षित जल की पहुंच सुनिश्चित करने के लिए सभी को अपना सहयोग देना होगा और इसमें अपनी सह भागिता निभानी होगी। यह योजना हमारे देश के लिए न केवल एक महत्वपूर्ण कदम साबित होगी, बल्कि आने वाली पीढ़ियों के लिए एक बेहतर और समृद्ध भविष्य की गारंटी भी होगी। इस मिशन ने हमें यह दिखाया है कि एक साथ मिलकर हम किसी भी चुनौती का सामना कर सकते हैं और सफलता की ऊंचाइयों को छू सकते हैं। उम्मीद है, इस मिशन की चुनौतियों का भी हम सब मिलकर सामना करेंगे, और उनको दूर करके हर भारतीय तक स्वच्छ जल पहुंचाने की मुहिम को सफल बनाएंगे। अभी हमें इसके महत्व का आकलन करके जरूरी कदम उठाने होंगे।

अवनीश कुमार गुप्ता, टिप्पणीकार

पहले जल-स्रोतों पर तो ध्यान दीजिए

उस दौर को बीते अभी ज्यादा समय नहीं हुआ है, जब हम खुलेआम किसी भी हैंडपंप या जल-स्रोत से पानी पी लिया करते थे। इससे हमारी प्यास भी खूब मिटती थी। मगर बाद में जीवाणु-विषाणु या आर्सेनिक का ऐसा खेल चला कि सब कुछ खत्म हो गया। तालाब और कुएं तो लुप्त हुए ही, हैंडपंप भी अब बमुश्किल ही दिखते हैं। खासकर शहरों में। इसका नतीजा क्या निकला? भारत में प्रति व्यक्ति पानी की उपलब्धता कम होने लगी। वर्ष 2001 में सालाना प्रति व्यक्ति जल उपलब्धता औसतन 1,816 घन मीटर थी, जो 2011 में घटकर 1,545 घन मीटर हो गई। साल 2021 में तो यह उपलब्धता और घटकर अनुमानित 1,486 घन मीटर रह गई। साल 2031 में इस आंकड़े के लुढ़कने य 1,367 घन मीटर तक पहुंच जाने का अनुमान लगाया गया है। कहा जा सकता है कि चूंकि इन वर्षों में जनसंख्या में भी बढ़ोतरी हुई है, इसलिए प्रति व्यक्ति जल की उपलब्धता में गिरावट आई है, लेकिन इसी बात को प्रमुख वजह मानने के बजाय क्या हमें यह नहीं सोचना चाहिए कि हमने अपने प्राकृतिक जल-स्रोतों के साथ कितना खिलवाड़ किया है?

पहले स्वच्छ जल की कमी इसलिए भी नहीं होती थी, क्योंकि नदी, तालाब, झील, पोखर, कुएं जैसे सभी प्राकृतिक जल-स्रोत आस-पास होते थे। इससे भूजल की उपलब्धता बनी रहती थी और स्वच्छ जल की कहीं कोई दिक्कत नहीं होती थी। मगर बाद में ताल-तलैयों के प्रति सरकारी और सामाजिक उदासीनता एवं भूजल जैसे प्राकृतिक संसाधनों के अत्यधिक दोहन ने स्वच्छ जल का गंभीर संकट हमारे सामने खड़ा कर दिया। रही-सही कसर आर्सेनिक जैसे तत्वों और पानी में मौजूद भारी धातुओं ने पूरी कर दी, जिसके कारण हैंडपंपों से साफ पानी निकलना बंद हो गया। लोग बोतलबंद पानी खरीदने को मजबूर होने लगे। पहले यह संकट शहरों में ही देखा जाता था, पर अब देश के गांव भी इससे जूझ रहे हैं। वहां भी पीने का साफ पानी आसानी से नहीं मिलता। आंकड़े तो यह भी हैं कि देश के करीब साढ़े सात करोड़ लोगों को मानक के अनुरूप पीने का पानी उपलब्ध नहीं है। यह संख्या आने वाले दिनों में और बढ़ेगी ही।

कहने के लिए सरकार भले ही हर घर में नल लगवा दे, लेकिन जब तक जल-स्रोतों को ठीक नहीं किया जाएगा, तब तक किसी योजना का कोई मतलब नहीं है। यही कारण है कि नल लगे कई घरों में पानी नहीं आने की शिकायत लोग करते रहते हैं। अगर हमें सबको स्वच्छ जल पिलाना है, तो प्राकृतिक जल-स्रोतों पर पहले ध्यान देना होगा।

अमृतेश, टिप्पणीकार